CLASS- VIII - Hindi

1 भारत के गाँवों का जीवन शहरों की अपेक्षा आज भी सीधा एवं सरल है। ग्रामीण भोले-भाले, परिश्रमी और ईमानदार होते हैं। छल-कपट और बनावटी जीवन ने अभी गाँवों की आत्मा में प्रवेश नहीं किया है। हमारे देश में लगभग पाँच लाख गाँव हैं। इतनी बड़ी संख्या में गाँव होने पर भी ये उपेक्षित हैं। अधिकांश गाँवों में तो जीवन की अनुकूल दशाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं। वहाँ न तो पीने के पानी की उचित व्यवस्था है; न बिजली की, न समुचित स्कूल हैं न अस्पताल; न अन्य प्रकार की सुविधाएँ। अपनी ज़रूरतों के लिए उन्हें शहरों की ओर दौड़ना पड़ता है। बदहाली, बदइंतज़ामी इन गाँवों में सर्वत्र देखी जा सकती है। उड़ीसा में आए चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाएँ इन गाँवों की कलई खोलकर रख देती हैं और हमें सोचने पर मज़बूर कर देती हैं कि क्या हमारा अन्नदाता इतना बेहाल, बेबस और बदकिस्मत है कि वह नारकीय जीवन जीने को अभिशप्त है। हम तो कंप्यूटर युग में जी रहे हैं और हमारा अन्नदाता अभी भी आदम युग में जीने को अभिशप्त है।

(i) भारत के गाँवों का जीवन शहरों की अपेक्षा कैसा है?
(क) सीधा व सरल (ख) बहुत कठिन (ग) उपेक्षित (घ) विकसित

(ii) ग्रामीण लोग कैसे होते हैं?
(क) पढ़े-लिखे होते हैं (ख) मूर्ख और आलसी हैं (ग) चालाक हैं (घ) भोले और परिश्रमी हैं

(iii) हमारे देश में लगभग कितने गाँव हैं?
(क) चार लाख गाँव (ख) पाँच लाख गाँव (ग) सात लाख गाँव (घ) आठ लाख गाँव

(iv) ग्रामीण अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए कहाँ जाते हैं?
(क) मस्जिद जाते हैं (ख) घर जाते हैं (ग) शहर जाते हैं (घ) मंदिर जाते हैं

(v) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए—
(क) गाँव और हम (ख) भारत के गाँव (ग) गाँवों का देश (घ) ग्रामीण जीवन

उ0 .....

2. हमारा देश धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र है, जहाँ अनेक धर्मों के लोग मिल-जुल कर रहते हैं। सभ्यता और संस्कृति, साहित्य एवं संगीत तथा अनेक ललित कलाओं का विकास भी यहीं हुआ। विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ वेद इसी पवित्र भारत-भूमि पर रचे गए। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश इसी पावन धरा पर दिया था जो आज भी विश्व का प्रेरणा-स्रोत है। यहीं श्री राम ने स्वयं मर्यादा का पालन करके समाज को नवीन दृष्टि प्रदान की। भारतीय संस्कृति का मूल स्वर विश्व-कल्याण है। 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्' के स्वर इस भारत-भूमि पर सदैव गूँजते रहे हैं और गूँजते रहेंगे। एक अरब जनसंख्या वाला देश सत्य, अहिंसा और शांति का अनुगमन करने वाला है। सिंधु घाटी, मोहनजोदड़ो

और हड़प्पा जैसी संस्कृतियों को जन्म देने वाला भारत देश आज भी अपनी विशिष्टता बनाए हुए है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जगद्गुरु कहा जाने वाला भारत आज भी विश्व को जीवन-मूल्यों, आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाता रहता है।

(i) हमारा देश कैसा है?
(क) धर्म-निरपेक्ष (ख) हिंदू राष्ट्र (ग) मुस्लिम राष्ट्र (घ) ईसाई धर्म को मानने वाला

(ii) सभ्यता, साहित्य व अन्य ललित कलाओं का विकास कहाँ हुआ?
(क) चीन में (ख) भारत में (ग) जापान में (घ) अमेरिका में

(iii) श्री राम ने समाज को क्या दिया?
(क) आवश्यक सामान (ख) रामराज्य (ग) रामायण (घ) नवीन दृष्टि

(iv) भारतीय संस्कृति का मूल स्वर क्या है?
(क) अनेकता में एकता (ख) वसुधैव कुटुंबकम् (ग) विश्व-कल्याण (घ) धर्मांधता

(v) आध्यात्मिक क्षेत्र में भारत को क्या कहते हैं?
(क) जगद्गुरु (ख) छात्र (ग) गुरु (घ) अध्यापक

उ0 .....

3. वास्तव में विज्ञान ने मनुष्य को एक ओर आकाश-विहारी बनाया तो दूसरी ओर रत्नगर्भा धरती के अंतराल में जाने को बाध्य कर दिया। आज के वैज्ञानिकों का दावा है कि संसार उनकी मुट्ठी में है। परंतु यह तो मानवता पर एक कलंक है कि वे उसे अपने हृदय-प्रदेश में स्थान देने में असमर्थ हैं। विज्ञान की छत्रछाया में जहाँ मनुष्य एक ओर उन्नति कर रहा है, तो दूसरी ओर मनुष्यता मर रही है; एक ओर दिमाग की दौलत है तो दूसरी ओर दिल का दिवाला है; एक ओर राजनीति तांडव कर रही है तो दूसरी ओर मानव धर्म-नीति रो रही है। शक्ति का जितना अधिक विकास हो रहा है, शीलता उतनी ही सिकुड़ती जा रही है। विज्ञान के साथ-साथ हृदय का भी प्रसार हो; सद्भावना बढ़े; 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को बल मिले; प्रत्येक हृदय में उस नैसर्गिक शक्ति के प्रति आस्था बनी रहे; मानव मानव से प्रेम कर सके; तभी विज्ञान की सार्थकता में विश्वास किया जा सकता है, अन्यथा मनुष्य भी मनुष्य के प्रति अविश्वासी हो जाएगा और तब विज्ञान का ऐसा तांडव होगा कि संपूर्ण सृष्टि विनाश के कगार पर खड़ी होगी।

(i) मनुष्य को आकाशविहारी किसने बनाया?
(क) विज्ञान ने (ख) शिक्षा ने (ग) समाज ने (घ) ज्योतिष ने

(ii) वैज्ञानिकों का क्या दावा है?
(क) संसार मतलबी है (ख) संसार उनकी मुट्ठी में है (ग) संसार स्वार्थी है (घ) संसार रसहीन है

(iii) जहाँ एक ओर मनुष्य उन्नति कर रहा है वहीं दूसरी ओर मनुष्यता .....
(क) सुखी है (ख) बढ़ रही है (ग) सर्वप्रिय है (घ) मर रही है

(iv) विज्ञान के साथ-साथ किसका प्रसार होना चाहिए?
(क) हृदय का (ख) मस्तिष्क का (ग) घृणा का (घ) भौतिकता का

(v) विज्ञान के तांडव से क्या होगा?
(क) सृष्टि का प्रसार (ख) सपनों का हकीकत में परिवर्तन (ग) सृष्टि का विनाश (घ) सृष्टि का उत्थान

उ0 .....

4. किसी भी राष्ट्र के लिए एकता बहुत आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता के अभाव में राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता चाहे विकास कार्यों पर कितना ही व्यय किया जाए, विश्व की समस्याओं से स्वयं को बचाने का प्रयास किया जाए, कोई भी कार्य उस समय तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि देश में भावात्मक एकता स्थापित नहीं हो जाती। हमारे देश में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं—हिंदू, मुसलमान, ईसाई, सिख, बौद्ध और जैन आदि। इन सभी के धार्मिक विश्वास अलग-अलग होते हुए भी सभी भारतीय हैं। भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक भारतीय को समान अधिकार दिए गए हैं और यह भी कहा गया है कि धर्म के आधार पर उनके साथ कोई भेदभाव नहीं किया

जाएगा। लेकिन जब व्यवहार में विभिन्न मतावलंबियों के बीच भेदभाव किया जाता है या कि राजनैतिक एवं धार्मिक संगठन निहित स्वार्थों के लिए एक धार्मिक समुदाय को दूसरे धार्मिक समुदाय के विरुद्ध भड़काने का कार्य करते हैं तो इससे सांप्रदायिकता का जन्म होता है।

(i) हमारे देश में कैसे लोग रहते हैं?

(क) विभिन्न धर्मों को मानने वाले (ग) हिंदू धर्म को मानने वाले

(ख) लड़ने वाले (घ) किसी भी धर्म को न मानने वाले

(ii) सबके धार्मिक विश्वास अलग होने पर भी सब क्या हैं?

(क) नेता (ख) भारतीय (ग) परंपरावादी (घ) स्वार्थी

(iii) किसके अनुसार प्रत्येक भारतीय को समान अधिकार दिए गए हैं?

(क) आयु (ख) धर्म (ग) संविधान (घ) जाति

(iv) एक धार्मिक संप्रदाय द्वारा दूसरे को भड़काने से किसका जन्म होता है?

(क) अहिंसा (ख) सांप्रदायिकता (ग) प्रेम (घ) वैमनस्य

(v) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए—

(क) सांप्रदायिकता (ख) विभिन्नता में एकता (ग) धार्मिक समुदाय (घ) धार्मिक विश्वास

उ0 .....

5. साहित्य का आधार जीवन है। इसी नींव पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है, उसकी अटारियाँ, मीनार और गुंबद बनते हैं, लेकिन बुनियाद मिट्टी के नीचे दबी पड़ी है। उसे देखने का भी जी नहीं चाहेगा। जीवन परमात्मा की सृष्टि है, इसलिए अनंत है, अबोध्य है, अगम्य है। साहित्य मनुष्य की सृष्टि है, इसलिए सुबोध है, सुगम है और मर्यादाओं से परिचित है। जीवन परमात्मा को अपने कामों का जवाबदेह है या नहीं, हमें मालूम नहीं लेकिन साहित्य तो मनुष्य के सामने जवाबदेह है। इसके लिए कानून है, जिनसे वह इधर-उधर नहीं हो सकता है। जीवन का उद्देश्य ही आनंद है। मनुष्य जीवनपर्यंत आनंद की ही खोज में लगा रहता है। किसी को वह रत्न द्रव्य में मिलता है, किसी को भरे-पूरे परिवार में, किसी को लंबे-चौड़े भवन में, किसी को ऐश्वर्य में। लेकिन साहित्य का आनंद इस आनंद से ऊँचा है, इससे पवित्र है, उसका आधार सुंदर और सत्य से मिलता है। उसी आनंद को दर्शाना, वही आनंद उत्पन्न करना साहित्य का उद्देश्य है। ऐश्वर्य या भोग के आनंद में ग्लानि छिपी होती है। उससे अरुचि भी हो सकती है, पश्चाताप भी हो सकता है पर सुंदर से जो आनंद प्राप्त होता है, व अखंड है, वह अमर है।

(i) साहित्य मनुष्य के सामने जवाबदेह है। कैसे?

(क) साहित्य मर्यादाओं से बंधा है (ग) साहित्य मनुष्य की सृष्टि है

(ख) साहित्य आनंद है (घ) उपर्युक्त सभी

(ii) जीवन परमात्मा की सृष्टि किस तरह है?

(क) अबोध्य है, अगम्य है, अनंत है (ग) जीवनपर्यंत आनंद की खोज होती है

(ख) जीवन सुबोध है, सुगम है (घ) जीवन अखंड है, अमर है

(iii) मनुष्य जीवन की खोज में क्यों लगा रहता है?

(क) पश्चाताप करने के लिए (ग) भौतिक आनंद लेने के लिए

(ख) परमात्मा से मिलने के लिए (घ) उद्देश्यहीन

(iv) मनुष्य में ग्लानि कब पैदा होती है?

(क) जब वह कोई आनंद प्राप्त नहीं करता है (ग) जब भौतिक आनंद में सच्चा आनंद प्राप्त नहीं करता है

(ख) जब उद्देश्य में सफल नहीं होता है (घ) जब वह अपने अनुसार जीना चाहता है

(v) साहित्य की दीवार किस नींव पर खड़ी होती है?

(क) जीवन (ख) मृत्यु (ग) ऐश्वर्य (घ) ग्लानि

उ0 .....

6. कलाकार सौंदर्य प्रिय होता है। राष्ट्र पर मंडराती युद्ध की घनघोर घटाओं के बीच में कलाकार की वाणी ही बिजली की तरह पथ-प्रदर्शक बनती और गुमराहों को राह दिखला जाती है। अंतर्तम की सुंदर अनुभूति को अभिव्यक्त करने की क्षमता ही कलाकार का आदर्श है। किसी भी कलाकार का अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि अपने समकक्षीय मानव के प्रति उसमें अद्‌भुत, किंतु मानवीय सहानुभूति अवश्य ओत-प्रोत रहती है। उसमें एक ऐसी प्रवृत्ति पाई जाती है, जो मानव मात्र का कल्याण चाहती है और भेदभाव अथवा ऊँच-नीच के दूषित वातावरण की उसमें कहीं कोई गंध नहीं रहती। प्राचीन भारत के स्वर्णिम युग का अध्ययन करने से हमें विदित होता है कि जब संसार के अन्यान्य देश कला के नाम से सर्वथा अनभिज्ञ थें, तब हमारा देश कला की महत्ता को पूर्णत: समझता था। कला की रक्षा के लिए प्राचीन भारत ने कुछ उठा नहीं रखा था। क्या अमीरों और क्या फकीरों सभी के लिए कला की आवश्यकता समान रूप से स्वीकार की जाती थी— यहाँ तक कि धार्मिक और राजनीतिक संघर्षों के समय भी कला का स्वरूप अक्षुण्ण रखा जाता था। कला का चतुर्मुखी विकास भारतवर्ष के प्रत्येक युग में हुआ और इसके विकास पथ में किसी प्रकार का रोड़ा नहीं अटकाया गया। यही कारण है कि प्राचीन भारत का इतिहास हमारी तत्कालीन स्वतंत्रता का यश-गान अपने वक्ष से आज भी चिपकाए, हमें कला का वास्तविक सम्मान करने की प्रेरणा दे रहा है। यह बात दूसरी है कि इस प्रेरणा से हम प्रेरित हों या नहीं।

(i) कलाकार की वाणी में क्या शक्ति होती है?

(क) सौंदर्य वर्णन की (ग) पथ-प्रदर्शन करने की

(ख) आदर्श स्थापित करने की (घ) सहानुभूति देने की

(ii) कलाकार में कैसी प्रवृत्ति पाई जाती है?

(क) भेदभाव की (ग) कला का प्रदर्शन करने की

(ख) मानव मात्र के कल्याण की (घ) धन कमाने की

(iii) प्राचीन भारत में कला का क्या स्थान था?

(क) कला का सम्मान नहीं था (ग) कला की महत्ता समझी जाती थी

(ख) कला विकसित नहीं थी (घ) कला से सब अनभिज्ञ थे

(iv) कलाकार का आदर्श क्या होता है?

(क) कला का प्रचार करना (ग) मानवीय अधिकारों की रक्षा करना

(ख) राष्ट्रहित (घ) अंदर की सुंदर अनुभूति को अभिव्यक्त करना

(v) भारत का इतिहास हमें क्या प्रेरणा देता है?

(क) शहीद होने की (ग) अच्छे नागरिक होने की

(ख) कला का सम्मान करने की (घ) भेदभाव करने की

उ0 .....

7. अपने इतिहास के अधिकांश कालों में भारत एक सांस्कृतिक इकाई होते हुए भी पारस्परिक युद्धों से जर्जर होता रहा। यहाँ के शासक अपने शासन-कौशल में धूर्त एवं सावधान थे। समय-समय पर यहाँ दुर्भिक्ष, बाढ़ तथा प्लेग के प्रकोप होते रहे, जिससे सहस्त्रों व्यक्तियों की मृत्यु हुई। जन्मजात असमानता धर्मसंगत मानी गई, जिसके फलस्वरूप नीच कुल के व्यक्तियों का जीवन अभिशाप बन गया। इन सबके होते हुए भी हमारा विचार है कि पुरातन संसार के किसी भी भाग में मनुष्य के मनुष्य से तथा मनुष्य के राज्य से ऐसे सुंदर एवं मानवीय संबंध नहीं रहे हैं। किसी भी अन्य प्राचीन न्याय ग्रंथ ने मानवीय अधिकारों की इतनी सुरक्षा नहीं की। मनु के समान किसी अन्य प्राचीन स्मृतिकार ने युद्ध में न्याय के ऐसे उच्चादर्शों की घोषणा भी नहीं की। हिंदू कालीन भारत के युद्धों के इतिहास में कोई भी ऐसी कहानी नहीं है जिसमें नगर-के-नगर तलवार के घाट उतारे गए हों अथवा शांतिप्रिय नागरिकों का सामूहिक वध किया गया हो। असीरिया के बादशाहों की भयंकर क्रूरता जिसमें वे अपने बंदियों की खालें खिंचवा लेते थे, प्राचीन भारत में पूर्णत: अप्राप्य है। नि:संदेह कहीं-कहीं क्रूरता एवं कठोरतापूर्ण व्यवहार था। परंतु अन्य प्रारंभिक संस्कृतियों की अपेक्षा यह नगण्य था। हमारे लिए प्राचीन भारतीय सभ्यता की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी मानवीयता है।

(i) **भारत की स्थिति कमजोर क्यों हुई ?**
(क) युद्धों के कारण (ग) आर्थिक व्यवस्था के कारण
(ख) परंपराओं के कारण (घ) विभिन्न धर्मों के कारण

(ii) **भारत में पारस्परिक युद्धों का क्या कारण रहा होगा ?**
(क) यहाँ अनेक संस्कृतियों के लोग थे (ग) शासन-कौशल अच्छा नहीं था
(ख) युद्ध करना राजाओं का शौक था (घ) शासक लालची थे

(iii) **भारत में कौन-से प्राचीन न्याय ग्रंथ ने मानवीय अधिकारों की सुरक्षा की ?**
(क) राजनीतिशास्त्र (ख) समाजशास्त्र (ग) अर्थशास्त्र (घ) नीतिशास्त्र

(iv) **युद्ध में न्याय के उच्चादर्शों की घोषणा करने वाले थे—**
(क) तत्कालीन अर्थशास्त्री (ग) राज्य के शासक
(ख) प्राचीन स्मृतिकार मनु (घ) सेनापति

(v) **भारत के इतिहास में किस तरह की घटनाएँ अप्राप्य हैं ?**
(क) दुर्भिक्ष और बाढ़ की (ग) बादशाहों की क्रूरता की
(ख) युद्धों की (घ) मानवीय संबंधों की

उ0 .....

8. श्रम की अवज्ञा के परिणाम का सबसे ज्वलंत उदाहरण है—हमारे देश में व्याप्त शिक्षित वर्ग की बेकारी। हमारा शिक्षित युवा वर्ग शारीरिक श्रमपरक कार्य करने से परहेज करता है। वह यह नहीं सोचता कि शारीरिक श्रम परिणामत: कितना सुखदायी होता है। पसीने के सिंचित वृक्ष में लगने वाला फल कितना मधुर होता है। 'दिन अस्त और मज़दूर मस्त' इसका भेद जानने वाले महात्मा ईसा मसीह ने अपने अनुयायियों को यह परामर्श दिया था कि तुम केवल पसीने की कमाई खाओगे। पसीना टपकाने के बाद मन को संतोष और तन को सुख मिलता है, भूख भी लगती है और चैन की नींद भी आती है। हमारे समाज में शारीरिक श्रम न करना सामान्यत: उच्च सामाजिक स्तर की पहचान माना जाता है। यही कारण है कि ज्यों-ज्यों आर्थिक स्थिति में सुधार होता जाता है, त्यों-त्यों बीमारियों की संख्या में वृद्धि होती जाती है। इतना ही नहीं बीमारियों की नई-नई किस्में भी सामने आती जाती हैं। जिस समाज में शारीरिक श्रम के प्रति हेय दृष्टि नहीं होती, वह समाज अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ एवं सुखी दिखायी देता है।

(i) **गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए—**
(क) श्रम हीनता और बेकारी (ग) शिक्षितों में बेरोजगारी
(ख) श्रम हीनता के दुष्परिणाम (घ) श्रम और शिक्षा

(ii) **सिंचित में कौन-सा प्रत्यय है ?**
(क) त (ख) इत (ग) सम् (घ) सम

(iii) **ईसा मसीह ने अपने शिष्यों को क्या परामर्श दिया था ?**
(क) शारीरिक श्रम करो (ग) मेहनत करके खाओ
(ख) मानसिक परिश्रम करो (घ) ईश्वर का भजन करो

(iv) **मनुष्य के सामाजिक स्तर की पहचान किससे की जाती है ?**
(क) बेकारी से (ख) श्रम से (ग) धन से (घ) शारीरिक श्रम न करने से

(v) **कौन-सा समाज अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ तथा सुखी होता है ?**
(क) स्वस्थ (ग) निष्क्रिय
(ख) शारीरिक श्रम में रुचि रखने वाला (घ) अत्यंत परिश्रमी

उ0 .....

9. वह ईंट, जिसने अपने को सात हाथ ज़मीन के अंदर इसलिए गाड़ दिया कि इमारत ज़मीन के सौ हाथ ऊपर तक जा सके। वह ईंट, जिसने अपने लिए अंधकूप इसलिए कबूल किया कि ऊपर के उसके साथियों को स्वच्छ हवा मिलती रहे, सुनहली रोशनी मिलती रहे। वह ईंट, जिसने अपना अस्तित्व इसलिए विलीन कर दिया कि संसार एक सुंदर

सृष्टि देखे। सुंदर सृष्टि! सुंदर सृष्टि हमेशा ही बलिदान खोजती है, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का। सुंदर इमारत बने, इसलिए कुछ पक्की-पक्की लाल ईंटों को चुपचाप नींव में जाना है। सुंदर समाज बने, इसलिए कुछ तपे-तपाए लोगों को मौन-मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है। जिस शहादत को शोहरत मिली, जिस बलिदान को प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वह इमारत का कंगूरा है—मंदिर का कलश है। हाँ, शहादत और मौन-मूक! समाज की आधारशिला यही होती है।

(i) ईंट ने अपने लिए अंधकूप कबूल किया क्योंकि—

(क) उसे अपना स्वरूप पसंद नहीं है (ग) अन्य ईंटों को हवा और रोशनी मिलती रहे

(ख) वह स्वयं को मज़बूत समझती है (घ) उसको मिट्टी से लगाव है

(ii) सुंदर सृष्टि के निर्माण के लिए आवश्यक है—

(क) सुंदर मानव (ख) बलिदान (ग) प्राकृतिक सौंदर्य (घ) तकनीक का विकास

(iii) सुंदर इमारत बनाने के लिए ईंट को जाना पड़ता है—

(क) भट्टों में (ख) ट्रकों में (ग) तहखानों में (घ) नींव में

(iv) जिस बलिदान को प्रसिद्धि मिले उसे कहा गया—

(क) इमारत का कंगूरा और मंदिर का कलश (ग) मंदिर का कलश और मंदिर का देवता

(ख) इमारत की नींव और मंदिर का कलश (घ) इमारत की दीवार और इमारत की नींव

(v) समाज की आधारशिला टिकी है—

(क) धर्म और धन पर (ग) मौन-मूक शहादत पर

(ख) शहादत और देशभक्ति पर (घ) धन और ईमानदारी पर

उ० .....

10. वाणी प्राणी की पहचान है। जिस प्रकार कौए और कोयल की पहचान उनकी वाणी से हो जाती है, उसी प्रकार किसी व्यक्ति के आचार-व्यवहार तथा स्वभाव की परख उसकी वाणी द्वारा ही होती है। मीठी वाणी दूसरों को वश में करने की औषधि है। जब हम मधुर वाणी का श्रवण करते हैं, तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है। सज्जन सर्वदा मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, जबकि दुर्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है। मीठी वाणी शत्रु को मित्र बना सकती है, निराश व्यक्तियों में आशा-उत्साह का संचार कर सकती है। कटु वाणी हृदय में शूल की तरह चुभती है। इससे अपने भी पराये हो जाते हैं। इतना ही नहीं कटु वाणी लड़ाई-झगड़ों, यहाँ तक कि बड़े युद्ध का कारण भी बन जाती है। द्रौपदी के कटु वचन महाभारत का कारण बने, ऐसा कहा जाता है। जिस व्यक्ति ने अपनी वाणी को वश में कर लिया और मधुर वचनों का प्रयोग सीख लिया, उसने मानो सब पा लिया। मधुर वाणी अमृत के समान कार्य करती है।

(i) प्राणी की पहचान किससे होती है?

(क) कपड़ों से (ख) व्यवहार से (ग) वाणी से (घ) चाल से

(ii) दुर्जनों की वाणी होती है—

(क) मीठी (ख) कटु (ग) कटु व कर्कश (घ) मंत्रमुग्ध करने वाली

(iii) ऐसा कहा जाता है कि महाभारत का कारण था द्रौपदी के—

(क) मधुर वचन (ख) प्रेम (ग) कटु वचन (घ) ममता

(iv) हमारा चित्त कैसी वाणी के श्रवण से प्रसन्न हो जाता है?

(क) मधुर वाणी (ग) जोशीली वाणी

(ख) दुर्जनों की वाणी (घ) अहंकारपूर्ण वाणी

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा—

(क) कटु वाणी (ख) मनुष्य (ग) मधुर वाणी (घ) वाणी

उ० .....